रामचन्द्रशतकम्

१. समस्तामरप्रार्चितस्तोत्रपात्र !
प्रमत्तासुरप्राणवल्लीलवित्र !
दयासान्द्र राजेन्द्र सीताकलत्र !
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

राम तुम्हारी अतुल शक्ति की
अमर सभी प्रस्तुति करते हैं,
असुर गर्व से मूर्छित हो तब
सम्मुख प्राण नहीं धरते हैं,

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२. दुरात्माहमत्यन्तमूढोऽतिदीन
सत्वमार्तावनः पावनस्सर्ववेत्ता ।
नहि त्वां विना विद्यते मे शरण्यः
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

दीन पतित हूँ बुद्धि भ्रष्ट है
तुम हो पावन औ आर्तावन,
कौन बचाएगा मुझको प्रभु !
बिना तुम्हारे विकसित चितवन !

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३. अहं दुःखपूर्तिस्त्वमानन्दमूर्ति
स्सदाहं प्रमुग्धस्स्वयं त्वं विदग्धः ।
अहं दुष्प्रचारस्त्व मंहोविदूरः
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

मैं दुःखित तुम आनन्द लसित
मैं मोहाहत तुम विदग्ध मन
बने रम्य गुण गण से अवसित
मैं हूँ पापी तुम पाप हरण ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४. बलं रोदनं बालकानामिति त्वं
विदन्मां समाश्वासयातीव मूढम् ।
विजानासि मे तप्तचेतस्त्व मेव
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

मूढ मुझे समझाओ, समझे
बालक को रोदन देता बल,
क्लेशों से व्याकुल मेरा मन
जिसे बचाओ होकर अविचल ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५. **विपन्नोऽहमत्यन्तसंसारखिन्न**
स्त्वदन्यो न मां कोऽपि पातुं समर्थः ।
क्षमित्वाऽपराधान्मदीयाननेकान्
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ।।

पापी जग के अंध कूप में
मग्न मुझे दे कर अपना कर
कौन बना रक्षक तुम जैसा
सभी दुरित ये मेरे सह कर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६. **असन्तुष्टमत्यन्तलोलं प्रकृत्या**
मनो मेऽवशं भ्राम्यति क्लेशमूलम् ।
भवन्नामसङ्कीर्तने तन्नियम्य
प्रमोदं सदा देहि मे रामचन्द्र ! ।।

असन्तुष्ट हो लोल प्रकृति से
भ्रमित हुआ करता मेरा मन,
मुदित बनाओ दीन उसे तुम
दे अपने नाम - स्मृति बन्धन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७. क्वचिद्रागविद्वेष सन्तापयुक्तं
क्वचित् द्यूतपानाङ्गनाभोगसक्तम् ।
क्वचित् देहमात्सर्यगर्वानुरक्तम्
बधान त्वयीदं मनो रामचन्द्र ! ।।

कभी राग द्वेषों से चुंबित
मग्न कभी स्त्री भोगों में फिर
जुआ खेलने औ पीने में
रत मैं तन के मत्सर से घिर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८. प्रमत्तारिषड्वर्गनिघ्नं कृतघ्नं
प्रभूतावलेपंततानेकपापम् ।
वृथा जीवितं यापयन्तं नितान्तं
दयाम्भोनिधे पाहि मां रामचन्द्र ! ।।

छः रिपुओं के वश में जाकर
सदा गर्व में निज को भूले,
महान जीवन कौडी का कर
मैं रहता पापों में झूले ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९. अहं सर्वदाऽन्याङ्गनासक्तदृष्टि
र्न मे विद्यतेऽर्थार्जने कापि तुष्टिः ।
ममातीव सद्वञ्चनायां प्रहृष्टिः
खलो मत्समः कः प्रभो रामचन्द्र ! ॥

पर नारी पर लगती चितवन
तृप्त नहीं पा कितना भी धन,
मन को लगता सज्जन वञ्चन
कहाँ रहा मेरा सा खल जन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०. खसीमेव किञ्चिद्गज्ञता वञ्चते मां
जराविद्धि सर्वेन्द्रियाणि द्विषन्ति ।
न मे रोचते नश्वरं वस्तु प्राग्वत्
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

वञ्चित अल्प ज्ञान से नभ - से
लडते इंद्रिय जरा विमर्दित,
पहले के जैसे नश्वर जग
नहीं मुझे करता आकर्षित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

११. मदीयाङ्गसामर्थ्यसम्पद्विनष्टाऽ
धुना केवलव्यर्थतृष्णाऽवशिष्टा ।
भवत्पाद सेवामृतं पाययित्वा
चिरं जीवयन्पाहि मां रामचन्द्र ! ।।

नष्ट हुआ है सब का सब बल
व्यर्थ बची है तृष्णा केवल,
मुझे पिला कर निज सेवामृत
दिये जिलाओ जीवन संबल ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१२. सदाध्यासतोऽहं ममेतीदृशं सं
सरन्नाप्नुवं नित्यविश्रान्तिसौख्यम् ।
विना त्वद्दयामज्ञतैषा न नश्येत्
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ।।

'मैं हूँ मेरा है यह सब कुछ'
सोचे यह नहीं पा सका सुख,
बिना तुम्हारी करुणा के यह
कैसे दूरीकृत होता दुख ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१३. समारब्धवार्धक्यदौर्बल्ययोगा
दलम्यार्थभोगातितीव्रानुरागात् ।
विधिप्रातिकूल्याद्भृशं पीड्यमानं
कृपावारिधे ! पाहि मां रामचन्द्र ! ॥

चोटी पकडी वृद्ध दशा ने
आकर्षित करता अर्थ भोग,
शक्ति घटी बाधा से पीडित
बली दैव का प्रतिकूल योग ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१४. "निदिध्यासितव्योऽयमात्मे" ति वाक्यं
दृढं विश्वसन्मर्त्यमान्यानवेक्ष्य ।
भजे त्वां शरण्यं त्रिलोकैकनाथं
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

आत्मा का निबिड निदिध्यासन
आवश्यक समझे भक्तों के,
तारक ! तीनों भुवनों के प्रभु !
पालक संसार विरक्तों के ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१५. नभोनैल्यवद्रूप्यवच्छुक्तिकायां
त्वयीदं जगत्सर्वमध्यस्तमेव ।
असङ्गो भवान्सच्चिदानन्द मूर्ती
स्त्वया पालनीया वयं रामचन्द्र ! ॥

जैसे अम्बर पर नील वर्ण
रजत शुक्ति में जैसे शोभन,
वैसे जग तुम पर विभ्राजित
सत् चित् आनन्द रूप भगवन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१६. सदाहं विमूढोऽपि सर्वज्ञमानी
दुरात्मापि निष्कल्मषम्मन्य एव ।
परायत्तचित्तोऽप्यतीव स्वतन्त्रोऽ
स्त्यलज्ञोऽबलोऽपि प्रभो रामचन्द्र ! ॥

अज्ञानी फिर समझे ज्ञानी
पापी हूँ समझे पुण्य पुरुष,
अस्वतन्त्र फिर भी स्वतन्त्र-सा
निर्लज्ज अबल हूँ कलित कलुष ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१७. **विवर्तत्व दृष्ट्याऽहमादिप्रपञ्चः**
पुनस्संवृतत्वेक्षणे नात्मतत्वम् ।
त्वया लोक्यते क्रीडया निर्गुणेन
स्वभावेन नित्यं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

एक दूसरे से विवर्त दृग
अलग बताता, फिर संवृत दृग,
देता तत्व रूप, हे निर्गुण !
तव लीला से स्मित जगती मृग ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१८. **त्वदीयानुकम्पां विनाद्वैतसम्प**
न्न कस्यापि पुंसो लभेतेह नूनम् ।
प्रपूर्णाऽपवादेक्षणेनैव बोध्यं
भवत्सत्यतत्वं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

अद्वैती सिद्धान्त तत्व रे
विदित तुम्हारी दया वृष्टि से,
होता रहता ज्ञात तुम्हारा
सत्य तत्व अपवाद दृष्टि से ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१९. अविद्यावकुण्ठो यदोत्क्षिप्यते मे
तदाहं भवत्येव लीनो भवामि ।
अलं शुष्कवेदान्तशास्त्रप्रलापै
र्वयं किङ्करास्त्वं प्रभू रामचन्द्र ! ॥

गुप्त अविद्या का अवगुंठन
यदि दूर हुआ तो मिल जाता,
मैं तुम में, बस दर्शन अंडबंड
तुम प्रभु किंकर मैं गुण गाता ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२०. असत्येन्द्रियग्राह्यवेदान्तवाचः
प्रमाणं मनोऽतीतसद्वस्तुनस्स्यात् ।
अलं बाह्यजिज्ञासयाकाशदृष्ट्याऽ
द्य मां रक्ष सीतापते रामचन्द्र ! ॥

झूठे इन्द्रिय ग्राह्य दार्शनिक
विषय कभी होते सत् प्रमाण ?
बस बाहर की जिज्ञासा से
काश दृष्टि से, तुम करो त्राण ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२१. यथा भाव्यते यत्तथा भूयते तत्
मनोमूलमेवाखिलं विश्वमेतत् ।
अहं तद्वशस्तद्वशन्ते भ्रमन्ता
वयःकान्तनिघ्नं भवेद्रामचन्द्र ! ॥

जैसा विचार वैसा विकार
विश्व रूप का मन ही कारण,
मन के वश मैं, चुम्बक गुण से
युक्त तुम्हारे अधीन वह मन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२२. भवेच्चेद्यतो वक्ररेखान्तयोग
स्ततो भिन्नवेदान्तवाक्यान्वयस्यात् ।
वृथैवोद्यमः पौरुषे यत्सुखाप्त्यै
त्वदिच्छाविरुद्धः प्रभो रामचन्द्र ! ॥

यदि हो टेढी रेखान्तों का
योग कभी तो भिन्न तत्व मुख
वाक्य एक हों, तव इच्छा के
बिन व्यर्थ यत्न पाने का सुख ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२३. समस्तं ऋषिप्रोक्तमत्यन्तमाप्त
प्रमाणीकृतं सर्वलोकोपकारि ।
तथापि त्वदीयाङ्घ्रिभक्तिप्रधानं
वचश्श्रद्दधामि प्रभो रामचन्द्र ! ।।

ऋषियों के आप्त वाक्य हितकर
औ प्रामाणिक होते सचमुच,
फिर भी प्रभु ! भवदीय भक्ति के
रक्ति वचन लगते सब कुछ ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२४. यथा वेदवाचो वृथार्थानभिज्ञे
तथा शास्त्रचर्चा भवद्भक्ति हीने ।
भवद्भक्तिचिह्नं दयासत्यवाक्यं
भवन्नामसङ्कीर्तनं रामचन्द्र ! ।।

व्यर्थ वेद अर्थ अनभिज्ञ के
व्यर्थ वाद श्रद्धा विहीन के
दया सत्य भगवत्संकीर्तन
लक्षण हैं तव भक्ति लीन के ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२५. कदाप्यस्य शास्त्रीयवादस्य नान्तो
विचारोऽपि विश्वासविध्वंसकारी ।
त्वमेवाहमित्युक्तिरन्यायमूला
भवद्भक्तिरेवानघा रामचन्द्र ! ।।

शास्त्रवाद का अन्त नहीं है
मात्र वाद इति करता प्रत्यय,
'तुम - मैं' मूलक भेद भाव है
अनुचित, बस भवद्भक्ति संचय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२६. यथार्थं भवत्येव नः पञ्चभूता
त्मकं विश्वमस्मासु यावत् स्पृहास्ति ।
ततो योऽवशिष्टः पदार्थो भवान्सः
प्रबोधस्वरूपः प्रभो रामचन्द्र ! ।।

स्पृहा रही जब तक तब तक जग
लगता है सत् पंचभूत मय,
प्रज्ञा रूपी तुम शेष वस्तु
हो जाता है जब उसका लय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२७. **सुखेप्साकृतस्स्यात्प्रयत्नः प्रजानां**
त्वदीयानुकम्पां विनानर्थकारी ।
भवान्यन्त्र्यहं यन्त्र एवास्वतन्त्रः
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

कोई सच्चा सुख पाता तव
अनुकम्पा से दूर पडा जो,
तुम यंत्री हो हुआ यन्त्र मैं
वशी तुम्हारा रहा खडा हो ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२८. **निरूढ्या यथास्मीत्यहं निश्चिनोमि**
स्वयं त्वामपि ज्ञानमूलं तथैव ।
विना कारणं जायते नैव कार्यं
सहेतु स्त्वमाद्यः प्रभो रामचन्द्र ! ॥

'मैं हूँ' जैसे निश्चित वैसे
ज्ञान मूल तुम हो तम वारण,
मूल भूत कारण तुम जग का
कैसे हो कार्य बिना कारण ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

२९. मम स्वप्नदृष्ट्यान्ततो जाग्रतापि
प्रदृष्टं जगद्वास्तवं नेति मन्ये ।
सुषुप्तिस्थिताज्ञातवस्त्वेव सत्यं
भवांस्तत्स्वरूपः प्रभो रामचन्द्र ! ।।

एक दूसरे में झूठ है
जागृति औ सपने में जो कुछ
मात्र सत्य अविदित सुषुप्तिगत
तुम तत्स्वरूप होते सचमुच ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३०. हृदन्तर्गतज्योतिरेकत्र बीजं
त्वमेवासि सर्वत्र कार्यप्रपञ्चः ।
अतस्त्वं गुणी निर्गुणोऽपि द्विधासि
स्वयं बोधरूपः प्रभो रामचन्द्र ! ।।

ज्योति दहकती बीज रूप में
जिसके तुम कार्य रूप भी बन,
प्रकटित, सगुण और निर्गुण हो
बोध रूप विभु मुक्त करो जीवन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३१. तरङ्गोऽस्ति वार्धौ न वार्धिस्तरङ्गे
तथा विश्वमस्ति त्वयि त्वं न विश्वे ।
त्वमेव प्रमाणप्रमेयस्वरूपः
कथं विद्महे त्वां प्रभो रामचन्द्र ! ।।

लहर जलधि में, पर लहरों में
नहीं जलधि, एसे तुम पर जग
ना उसमें तुम कैसे जानूँ ?
तुम प्रमाण औ प्रमेय जगमग ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३२. अलं शुष्कतर्केण शङ्कास्पदेना
मुना वेदवाङ्नित्यतादूषकेन ।
सुशीलव्रतध्यानभक्तिद्विषातः
परं त्वां भजेऽहं प्रभो रामचन्द्र ! ।।

शंका कारक वेद नित्यता
दूषक भक्ति शील व्रतनाशक
शुष्क तर्क से विसुख तुम्हारा
मैं हूँ सेवक सतत उपासक ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३३. महीजाधरोष्ठप्रवालेऽलिकल्पा
पुरद्विड्धनुः काननेऽग्निच्छटाभा ।
सकृत्कौशिकाङ्घ्रिस्थिताम्भोजतुल्या
चकास्ति स्म ते दृक् प्रभो रामचन्द्र ! ॥

चकित जानकी छद विद्रुम पर
चञ्चरीक हो, मदन शरासन
कानन की ज्वाला या कौशिक
पद फैली नलिनी तव चितवन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३४. क्वचिज्जानकीगण्डपालिं लगन्तं
क्वचिद्वायुपुत्रोत्तमाङ्गं स्पृशन्तम् ।
क्वचिद्दैत्यविध्वंसकास्त्रं क्षिपन्तं
करं ते स्मरामि प्रभो रामचन्द्र ! ॥

किसी समय सीता कपोल पर
प्रसरित कभी वायु युत के सर
पर स्थित, दैत्य दमन करने
उद्यत लिये शरों को तव कर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३५. **सदा भक्तकल्हारसम्पूर्णचन्द्रं**
विमत्तासुरध्वान्तचण्डार्कबिम्बम् ।
मुहुर्भावये वेदनिश्वासयुक्तं
त्वदीयं स्मितास्यं प्रभो रामचन्द्र ! ।।

भक्तों के मुख कैरव का विधु
तामस तम का है चण्ड तपन,
सांस बनीं सब श्रुतियाँ जिसकी
सदा तुम्हारा है स्मित आनन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३६. **अहन्तास्ति यावन्न शक्नोमि तावत्**
भवन्तं समालोकितुं वस्तुतोऽहम् ।
भवद्दर्शनेन प्रणश्येदहन्ते
क्षयेयं कथं त्वां प्रभो रामचन्द्र ! ।।

अहंकार यह रहता जब तक
तत्व तुम्हारा तब तक अविदित,
मुक्त मुझे समझो उससे, जब
दरसाओ तव रूप अपरिमित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३७. नभः खण्डशो मुद्गरेणेव भेत्तुं
पदार्थस्थितिं तर्कतो वेत्तुमीहे ।
अलं तत्वजिज्ञासया शून्यदृष्ट्या
भवद्भक्तिरेवास्तु मे रामचन्द्र ! ॥

कहीं गगन खण्डित होता है
मुद्गर से ? तत्व नहीं अवगत,
होता शुष्क तर्क से वैसे
तत्व जानता जो कि भक्तिरत ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३८. ददास्यात्मकर्मानुसारं फलानि
प्रकृत्यैव कर्तव्यतां पक्षिजन्तून् ।
त्वमाक्रीडसे विश्वरूपेण चेता
स्तटस्थोऽद्वयोऽपि प्रभो रामचन्द्र ! ॥

देते हो फल देख कर्म चय
कर्म प्रकृति से होता प्रभवित,
सच है, परम पुरुष तुम ही
सब जीवों में होते ज्योतित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

३९. स्मरेयं यदि त्वां जगद्रक्षणार्थं
मुहुर्घोरकष्टान्बहून्सह्यमानम् ।
न किं सन्तपेन्मानसं मे प्रसार्या
श्रुकुल्ये दृशोर्द्रारतो रामचन्द्र ! ।।

जग भर में सुख भरने व्याकुल
तुम जब सहते जगती का दुःख,
दिल गल जाता आँसू बहते
देख तुम्हें तब ना पाता सुख ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४०. भवान्निर्गुणः केवलस्साक्षिचेता
स्त्वदन्यः पदार्थो न कोऽप्यस्ति नूनम् ।
इति प्रत्यहं बुध्यमानोऽपि दुःखा
म्यहं किं करोमि प्रभो रामचन्द्र ! ।।

निर्गुण केवल साक्षी मन के
हो तुम, तुम से नहीं अन्य है,
यह जाने फिर दुख से व्याकुल
मन मेरा हा ! मोह जन्य है ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४१. **ग्रहाणां गतिः कालकर्मस्वभाव**
स्थितिः सम्यगालोचनापूर्विकेव ।
भवत्कर्तृकं वास्तवं विश्वमेतत्
वयं रक्षणीयाः प्रभो रामचन्द्र ! ।।

काल कर्म का स्वभाव ग्रहगति
सब के सब हैं रे एक विषय,
विदित हुआ है सारे जग का
तुम ही करते सृजन और लय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४२. **अनित्यत्वमिथ्यात्वयोरर्थ एको**
भवेन्निर्गुणत्वस्वतन्त्रत्वयोश्च ।
त्वयि भ्राम्यमाणप्रधानं यथेष्टं
नियच्छस्यसङ्गः प्रभो रामचन्द्र ! ।।

अनित्यता औ मिथ्या का जो
निर्गुणता औ स्वतंत्रता का,
अर्थ एक निस्संगी तुम में
क्रियाशील है प्रकृति पताका ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४३. अहं नोपकर्तुं समर्थोऽपकर्तुं
स्वयं जीवितुं वा विना तावकेच्छम् ।
प्लवङ्गं यथा न श्रयस्याश्रितं मां
किमर्थं दयाम्भोनिधे रामचन्द्र ! ॥

बिना तुम्हारी रुचि के मैं क्या
करण त्याग कर सकता जीवन ?
मर्कट-सा मैं चिपका तुम से
मुझे छोडने का क्या कारण ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४४. न जानेऽहमस्थूलदेहस्य तत्त्वं
कथं ज्ञायतेऽतीन्द्रियात्मस्वरूपम् ।
वृथा ज्ञानवैराग्यसम्पद्बुभुक्षा
भजे श्रेयसे त्वां प्रभो रामचन्द्र ! ॥

सूक्ष्म देह ही विदित नहीं जब
कैसे आत्मा ज्ञात अतीन्द्रिय ?
व्यर्थ ज्ञान वैराग्य विभव है
रक्ति तुम्हारी ही मुझ को प्रिय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४५. मनस्स्वप्नजाग्रत्सुषुप्तिक्रमेणे
त्ववस्थात्रयं साक्षिणि त्वय्यजस्त्रम् ।
अयःकान्तवद्भात्यसत्सत्स्वभावं
त्वदायत्तमेतत्प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिमयी इस
मेरे जीवन के साक्षी बन,
चुम्बक जैसे तुम आकर्षित
करते मेरा लोहे का मन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४६. समारब्धसौख्यावभासा क्रमेणा
न्ततो वर्धमानातिदुर्धर्षशोका ।
इयं संसृतिर्भ्रान्तिमूला स्वतन्त्रा
दयाम्भोनिधे पाहि मां रामचन्द्र ! ॥

जगती दर्शित सुखमय जैसा
किन्तु अन्त में अप्रिय लगती,
पराधीन शोकाकुल एवं
भ्रांति मूल जो पग पग पगती ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४७. फलं हस्तयोस्तावकीनाङ्घ्रिपूजा
फलं नेत्रयो स्त्वच्छुभाकारवीक्षा ।
फलं जन्मनस्त्वत्पदाम्भोज भक्तिः
कृपासान्द्र सीतापते रामचन्द्र ! ॥

हस्त सफल वे जो तुम्हारे
चरणों की पूजा करते हैं,
नेत्र सफल तव दर्शन से वे
सफल जीव श्रद्धा धरते हैं ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४८. गुणाद्भिद्यते नो गुणी दृश्यतो दृक
तथा विश्वतोऽहं न भिन्नः कदापि ।
अनावश्यकः क्लेशदोऽयं विचारः
सुखं ते कथाकर्णनं रामचन्द्र ! ॥

गुणी गुणों से अलग नहीं है
दृश्य दृगों से भिन्न नहीं है,
वैसे मैं भी एक जगत से
जग तारण ! तव रक्ति सही है ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

४९. **न याचेऽमनस्कस्थितिं नैव मुक्तिं**
न वा बन्धुलोकाप्रियं मस्करित्वम् ।
न राज्याधिपत्यं न सम्भोगसौख्यं
भवद्दर्शनं देहि मे रामचन्द्र ! ।।

नहीं चाहता उदासीन रति
मुक्ति और सन्यासी के गुण,
चाहता नहीं राज्य भोग, बस
चाहा कामद दव रूप मसृण ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५०. **मरुत्सूनुसंवाहितं मौनिवन्द्यं**
तनुस्पर्शमात्राङ्गनाभूतग्रावम् ।
मरन्दीकृताकाशगङ्गं त्वदीयं
पदाब्जं दिदृक्षामहे रामचन्द्र ! ।।

पवन पुत्र के कर से सेवित
किया जिन्होंने पत्थर नारी,
देखूँ तव पद जिनसे निकली
मकरंदीकृत गंगा सारी ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५१. बहुस्यामिति प्रेक्षणेनैव विश्वं
विनिर्माय मायामयं त्वय्यनन्तम् ।
सदा क्रीडसे निर्गुणोऽपि स्वभावात्
अचिन्त्यप्रभाव प्रभो रामचन्द्र ! ॥

समझे 'बहु रूपों में होऊँ'
जग रच कर माया का आलय
अपने में, निर्गुण हो कर भी तुम
उसमें क्रीडा करते चिन्मय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५२. मुहुर्वेदशास्त्रप्रभेदानशेषान्
मदीयानुभूतिं समन्ताद्विचार्य ।
दृढं निश्चिनोमि प्रमाणं प्रमेयं
प्रमाता त्वमेवेत्यहं रामचन्द्र ! ॥

वेद शास्त्र की चर्चा की है
औं जगती का अनुभव पाया,
प्रमाण तुम हो प्रमेय भी हो
तुम्हीं प्रमाता मैं मन लाया ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५३. जडं पञ्चभूतात्मकं त्रिप्रकारै
गुंणैस्तद्वशं भ्राम्यति त्वय्यजस्रम् ।
समर्थस्त्वमेतद्यथेष्टं नियन्तुं
तटस्थोऽपि सीतापते रामचन्द्र ! ॥

जड जगती यह पंच भूत मय
त्रिगुणों से तुम में सदा भ्रमित,
साक्षी हो, फिर करते पालन
इसका, हो कर तुम आकर्षित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५४. यदेवेह सिद्धान्तितं वस्तु नाना
प्रकारैर्मतैरास्तिकैर्नास्तिकैर्वा ।
तदेवासि बुद्धिप्रवृत्तेर्निदानं
प्रबोधस्वरूप प्रभो रामचन्द्र ! ॥

भिन्न संप्रदायी जो जन गण
भिन्न धर्मवाले जो आस्तिक,
तुम्हारी मति का ही निदान
करते वर्णन वे भी नास्तिक ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५५. मदन्यः पदार्थो न कोऽप्यस्ति विश्वं
मृषेति प्रगल्भेत योऽद्वैतवादी ।
प्रमाणाधिकं तस्य दुःखं विपत्तौ
भवेन्मादृशस्य प्रभो रामचन्द्र ! ।।

"मुझ से भिन्न नहीं है कोई
जगती सारी झूठी है छल,"
कहनेवाला अद्वैती भी
दुखित हुआ करता है पल पल ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५६. मदीयात्सुषुप्तिः परोक्षैव मेऽहं
स्वतन्त्रो नहि स्वप्नजाग्रद्दशासु ।
यथेष्टं विहर्तुं ममातीववाञ्छा
कथं तोषयेर्मां प्रभो रामचन्द्र ! ।।

जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति दशा में
मूढ पडा मैं हूँ अस्वतंत्र,
कैसे कर लूँ स्वेच्छा विचरण ?
हे प्रभु ! समझाओ मुक्ति मंत्र ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५७. प्रमादान्वितं सर्वमर्त्यायुरेतत्
परायत्तमत्यन्तविभ्रान्तिमूलम् ।
ममेदं स्थिरं निर्भयं नित्यतृप्तं
क्रियेथा जगत्तोषकं रामचन्द्र ! ॥

अस्वतंत्र फिर भ्रान्ति मूल औ'
चिन्ता से आकुल जन जीवन,
स्थिर निर्भय एवं नित्य तृप्त
कर उसको प्रभु ! कर दो पावन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५८. अजा त्वद्वशाऽसत्सदङ्गा गुणत्र -
य्युपेतास्ति माया त्वयि भ्राम्यमाणा ।
यथेष्टं पुमांस्तां नरीनर्तयन् स
न्ततं क्रीडसे त्वं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

सत्-उसत् आत्मिका, त्रिगुणों से
युक्ता माया तुम से भ्रामित,
प्रभो ! नचाते हुए उसे तुम
अपना दिल बहलाते हो नित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

५९. **तुलायां समं दर्दुरां स्तोलयेच्चेत्**
समन्वेतुकामश्श्रुतीर्ब्रह्मणि स्यात् ।
कथं वेदितव्यस्स यस्सर्ववेत्ता
प्यलं व्यर्थ जिज्ञासया रामचन्द्र ! ॥

अगर तुला में तुलते मेंढक
सम, तो ब्रह्मन में श्रुति अन्वय
होता, हाँ कैसे हो ईश्वर
ज्ञात प्राज्ञ को भी बस संशय ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६०. **समश्शून्यवादेन सोऽद्वैतवाद**
स्ततः किं वरिष्ठो न चार्वाकवादः ।
महाराजमार्गो भवद्भक्तिरेवा
स्तु लोकोपकारक्षमा रामचन्द्र ! ॥

शून्य वाद अद्वैत वाद सम
दिखते, उनसे चार्वाक परम,
भक्ति मार्ग ही मानव हितकर
शुभ पथ लोकोपकार में क्षम ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६१. अहिंसाव्रतस्सत्यवाक् दीनबन्धुः
परस्त्रीपरद्रव्यकाङ्क्षाविहीनः ।
स्ववर्णोचिताचारवान्दानशौण्डः
प्रियस्ते स एव प्रभो रामचन्द्र ! ।।

सत्य अहिंसा के व्रत धारी
दीन बन्धु पर - नारी औ' पर
धन की कांक्षा से दूर पडा
दानी सुशील तुम को प्रिय वर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६२. स एवास्तिकश्श्रोत्रियस्सन्मुनीन्द्र
स्स येवानघः पावनस्सर्ववेत्ता ।
भवन्नाम सङ्कीर्तनं यः करोति
प्रजां रञ्जयन् प्रत्यहं रामचन्द्र ! ।।

वही सन्मुनी श्रोत्रिय आस्तिक
पाप रहित पावन सब ज्ञाता,
जो करता तव नाम स्मरण
बन लोगों का सुख दाता ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६३. **त्यजन्यस्स्वसौख्यं भरन्कष्टजालं**
करोतीह लोकोपकारं गृहस्थः ।
यतीन्द्रस्स एवाखिलज्ञस्स एव
प्रियस्ते स एव प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जो गृहस्थ अपना सुख छोडे
जग उपकारी बन कष्ट सहन
कर लेता है, सर्वज्ञ वही
वही यती है तव मन भावन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६४. **त्वयि व्यापृते व्योम्नि चेतस्यनन्ते**
समस्तेन्द्रियग्राह्यविश्वस्वरूपे ।
अहं सन्नपि त्वां न सन्दर्शयामी
ति मन्येऽहमाहो भ्रमो रामचन्द्र ! ॥

मन में और गगन में इन्द्रिय
गोचर विश्व रूप में भर कर,
शोभित तुम में रह कर भी मैं
तव दर्शन ना पाता भ्रम घर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६५. दशास्यो दशप्राणयुक्तश्शरीरी
विदेहात्मजारूपविद्यापहारी।
भ्रमाब्धिं समुल्लङ्घ्य ब्रह्मास्त्रतस्तं
विजित्याप तां त्वं पुना रामचन्द्र ! ॥

ज्ञान रूपिणी की चोरी की
दशमुख ने दस प्राणों को धर
जब, सीता को ले तुम लौटे
भ्रम सागर तर उसका वध कर।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६६. प्रवासोऽद्य मे जानकी विप्रलम्भो
न्मुखे रावणप्राणसंहारकाले।
भवद्धर्मदृष्टिर्विकारं मनाग
प्यवाप्सीत्कथं न प्रभो रामचन्द्र ! ॥

कानन के गमन काल में या
सीता वियोग में या रावण,
संहार समय में तव अनुपम
धर्म दृष्टि का समरस स्पन्दन।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६७. पृथिव्यम्बुतेजो मरुत्खानिवृद्धि
क्रमान्योऽन्यसंश्लेषविश्लेषकर्म ।
कथं कुर्युरेवं विनाधारभूता
वकाशास्फुरच्चेतसा रामचन्द्र ! ॥

धरणी पानी तेज मरुत नभ
जुडते और जुदा होते है
तुम्हारी प्रज्ञा से ही प्रभु !
बगैर जिसके सब खोते हैं ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६८. वियन्नास्ति चेत् क्ष्माम्बुतेजोनिलानां
मिथस्सङ्गमः कुत्र विश्लेषणं स्यात् ।
मृषैवासतस्सज्जनिर्नास्तिकानां
मतं किं प्रमाणं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

नहीं रहा नभ ही तो कैसे
अन्य भूत योजन अनुपम ?
सत निकलेगा कहीं असत से ?
नास्तिक की पृष्ठ भूमि ही भ्रम ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

६९. त्वयि स्वप्नवत् व्योम्नि मिथ्याप्रपञ्चं
भ्रमेणैव पश्यन् वृथेत्थं विकुर्वे ।
भवन्नाममात्रप्रभावेण मोह
ग्रहं नाशयामि प्रभो रामचन्द्र ! ॥

नभ - से तुम में सपना-सा जग
पैदा करता भ्रम मेरे मन,
दमन किये देती मोह - ग्रह
स्मृति जो तव नामों की पावन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७०. घटान्तर्बहिः पूर्ण खं भिद्यते किं
विभिन्ने घटेऽङ्के विनष्टे तथात्मा ।
सदात्मा शरीरद्युचेतोभिधानैः
त्वमेवागमैः कथ्यसे रामचन्द्र ! ॥

जब घट फटता तब क्या नभ भी
फटता जो है बाहर अन्तर ?
तन नश्वर, आत्मा स्थिर, तुम ही
देह चित्त नामों से भास्वर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७१. **प्रवृत्या जगद्वत् निवृत्या नभोवत्**
द्विधात्मानमेवेक्षसे त्वं प्रकृत्या ।
भवान्बद्धवन्मुक्तवल्लीलयास्ते
ह्यचिन्त्यप्रभाव प्रभो रामचन्द्र ! ॥

निवृत्ति में नभ जैसे लगते
हो, प्रवृत्ति में जग - से लगते,
तुम बन्धित औ' मुक्त प्रकृति से
होते निज महिमा में पगते ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७२. **मम स्वप्नद्दष्ट्यन्ततो व्यासमौने**
र्मतं सत्यमद्वैतमेवेति मन्ये ।
तथापि त्वदीयाङ्घ्रिभक्ती रुचि में
यथा जानकी ते प्रभो रामचन्द्र ! ॥

अद्वैत धर्म ही सत है जो
व्यास मुनीश्वर से स्पष्ट कथित,
फिर भी मुझको तव पद की रति
सीता की सी है तत्वायित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७३. **भवत्पूतनामैव जिह्वा वदेन्मे**
भवत्ख्यातिमेव शृणोतु श्रवो मे ।
भवद्दिव्यपादारविन्दद्वयं मे
मनश्चिन्तयेत्सन्ततं रामचन्द्र ! ।।

मेरी जिह्वा तव पूत नाम
ही ले, तव यश ही सुनें कान,
तुम्हारे पद सरसीरुह का
सन्तत मेरा मन करे गान ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७४. **मम स्वप्नजाग्रत्सुषुप्तित्र्यवस्था**
भवव्याधिचेष्यस्ततो मोचयित्वा ।
त्वदीयानुकम्पौषधं पाययित्वा
कुरूल्लाघमद्य प्रभो रामचंन्द्र ! ।।

पहले नष्ट करो प्रभु ! मेरी
बीमारी तीन दशा में स्थित,
अपनी दया दवा दे मेरे
तन को कर दे दो आनन्दित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७५. य एवेक्षते त्वत्पदं व्योममात्रं
मृषैवेति दृश्यं सदा मन्यमानः ।
स एवेह मृत्युञ्जयस्सर्वसाक्षी
भवत्पादभक्तः प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जो समझे 'नभ तव निवास' औ'
सभी दृश्य झूठा है, सो ही
तव पादों का सेवक सब का
साक्षी मृत्युंजय निर्मोही ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७६. त्वमाकाशवन्निर्विकारोऽपि विश्वं
सृजन्संहरन्नात्मनि क्रीडसीत्थम् ।
त्वदिच्छावशौ प्राणिनां बन्धमोक्षौ
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

तुम नभ जैसे निर्विकार फिर
भी जगती का सृजन संहरण,
निज में करते, तव वश में ही
है नर की मुक्ति और बन्धन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७७. **अलं निष्फलारम्भपञ्चाङ्गवाक्यै**
र्विनानुग्रहं ते न सुख्येच्छरीरी ।
सुखं त्वत्पदाम्भोजभक्तिर्दृढैव
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

आरंभ विफल पंचाङ्ग देख
कृपा बिना तव सुखी नहीं नर,
तव पाद भक्ति ही सुख दायक
यह मन का निश्चय हे ईश्वर !

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७८. **अविद्यात्मिकाकाशभूतात्मदर्शि**
प्रतिच्छन्दितात्मानमेवान्यथेक्ष्य ।
अहं द्वैतबुद्ध्ये दृशा संसरामि
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

निज आत्मा को नहीं समझ, जो
माया - अंबर में प्रतिबिंबित,
मैं करता हूँ जगत - संसरण
द्वैत बुद्धि के भ्रम में पालित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

७९. गुणो नास्ति कश्चिद्विना नाम तेऽस्यां
कृता वन्यशब्दा वृथा क्लेशमूलाः ।
भवद्भक्तिसम्बोधकं यत्तदेवो
त्तमं काव्यरत्नं प्रभो रामचन्द्र ! ।।

नहीं गुणी तव नाम बिना कुछ
दुख देते अन्य शब्द भव के,
यही काव्य उत्तम जो भरता
भक्ति भाव मन में मानव के !

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८०. महाघोरसंसारकारानुबद्धं
सदा रागविद्वेषपाशावरुद्धम् ।
अमोघान्तकक्रूरदण्डापविद्धं
दयाम्भोनिधे पाहि मां रामचन्द्र ! ।।

घोर जगत कारा में बन्धित
राग रोष से नित प्रतिरोधित,
अन्तक कर के क्रूर दण्ड की
धारा से प्रभु ! मैं अति पीडित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८१. **भवत्पादसन्दर्शनाभावहेतो**
स्समाक्रन्दितुं चेद्यथेष्टं समर्थः ।
ममाश्रुप्रवाहे जगत्किं न मज्जे
द्वियत्किं न भिद्येद्रवै रामचन्द्र ! ।।

अश्रु बहाऊँ यदि मैं तव शुभ
चरणों के ना करके दर्शन,
तो क्या उसमें ना डूबे जग
दुख रव से ना हो भिन्न गगन ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८२. **न चेद्भूतपूर्वं पदं तावकीनं**
ममेप्सोः प्रवृत्तिर्भवेत्किन्नु तस्मै ।
अलं संशयेन त्वमर्तैकरक्षा
व्रतस्सर्वतोऽसि प्रभो रामचन्द्र ! ।।

यदि तव पद पहले नहीं भूत
चाह नहीं रहती रे उस पर,
बस संशय, बन आर्तावन तुम
हो जगती के अन्तर बाहर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८३. **जगन्मोहनं फुल्लराजीवनेत्रं**
दयासागरं भक्तरक्षैकलोलम् ।
त्रिलोकेश्वरं जानकीप्राणमित्रं
भजे श्यामलं त्वां प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जग मोहन विकसित कमल नयन
दया जलधि भक्तों के रक्षक,
भू-जाता के प्राण सदृश प्रिय
हे श्यामल त्रिभुवन के शासक ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८४. **जडं व्योममात्रं मृषा व्योमपुष्पं**
यथा चेतनादन्यवस्त्वेव नास्ति ।
वृथा सम्भवान्मृत्युतः किं बिभेमि
भ्रमं नाशयामुं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

गगन कुसुम झूठा है जड जग
अन्य बचा जो सच्चा चेतन,
जन्म मरण से व्यर्थ डरूँ क्यों
कर दो प्रभु ! मेरा भ्रम नाशन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८५. **भवानग्रतः पृष्ठतः पार्श्वतस्तु**
स्थितस्सर्वदान्तर्बहिस्त्रायताम्माम् ।
भवत्पादपद्माश्रितोऽहं महात्मन्
जगन्नाथ सीतापते रामचन्द्र ! ॥

आगे पीछे पार्श्वों में औ'
अन्तर बाहर मेरे रह कर,
रक्षा करते हो तुम मेरी
मैं हूँ तव चरणों को तो धर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८६. **पवित्रेति मत्वापि सीतां विहाया**
प्रवादं विधूय प्रजां तोषयित्वा ।
स्वसौख्यं त्यजन्धर्ममेवाभ्यरक्षी
स्त्वदन्यो न राजा प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जाने सीता को पूत चरित
फिर भी त्यागे प्रजा तोष कर,
सुख छोडे बने धर्म रक्षक
कौन अन्य राजा तुम से वर ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८७. मदीयापराधान् क्षमस्वेति मां प्रा
र्थयेच्चेदहं रावणं जीवयेयम् ।
इति प्राकरोस्त्वं प्रतिज्ञां सभाया
महो धर्मवीर प्रभो रामचन्द्र ! ।।

''यदी रावण माँगे क्षमा भीख
अपने सब अपराध मान कर
तभी उसे कर दूँ संजीवित''
कहा तुम्हीं ने धर्म वीर नर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८८. भवन्नाममन्त्रप्रभावं स्वयं ने
श्वरो बुध्यते का कथा प्राकृतानाम् ।
नमस्ते भवध्वान्तचण्डारुणाया
श्रिताभीष्टदाय प्रभो रामचन्द्र ! ।।

नहीं जानते ईश्वर भी तव
नाम मन्त्र महिमा, फिर गिनती
वया जड नर की, भव तम के रवि
आश्रित वत्सल हे दाशरथी !

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

८९. **अहं शीकर स्त्वं समुद्रः करोऽहं**
त्वमर्कोऽस्यहं रेणुरद्रीश्वरस्त्वम् ।
अहं नश्वरश्शाश्वतस्त्वं मृषाहं
यथार्थस्त्वमेव प्रभो रामचन्द्र ! ॥

मैं शीकर हूँ तुम हो सागर
मैं हूँ कर तो तुम हो भास्कर
मैं हूँ रज कण तुम हो नग वर
मैं मृषा क्षणिक तुम सत नित घर ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९०. **अशेषै रसैरेष लोको भजंस्त्वां**
त्वयि द्राग्विलीयेत गायन्प्रनृत्यन् ।
समस्तैहिकं कर्म ते भक्तिरूपं
त्वदन्यन्न वस्तु प्रभो रामचन्द्र ! ॥

सभी रसों से तव सेवा कर
तुम में मिलता आखिर को जग,
ऐहिक सब कुछ भक्ति रूप तव
तुम से अन्य नहीं कुछ भी जग मग ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९१. अहं शोषयिष्यामि मत्ताम्बुराशिं
धनुर्लक्ष्मणेत्यालपन्नीश्वरत्वम् ।
तथासूसुचः पद्मपत्रायतापा
ङ्गतो निर्विकारोऽप्यहो रामचन्द्र ! ॥

''दे दो लक्ष्मण ! धनुष अभी मैं
दृप्त सिंधु को कर दूँ शोषित,''
कहते तुम से निर्विकार हो
चितवन से ईश्वरता दर्शित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९२. यतो जायते यत्ततो लीयते तत्
यथा मानसव्योमतस्स्वप्नविश्वम् ।
मृषैतज्जगद्भ्रान्तिजन्यं समस्तं
भवानेव सत्यं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जो जिससे निकला वह उसमें
मिलता जैसे सपना मन में,
झूठा सारा जग भ्रान्ति जन्य
यह, तुम ही सच्चे क्षण क्षण में ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९३. तवालं जगत्सृष्टिसंहारकेल्या
मम प्राणिनोऽतीव विभ्रान्तिकर्त्र्या ।
वृथाशूशुचोमां त्वदीयाङ्घ्रिभक्तं
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

सृष्टि और संहार केलि बस,
करता मुझको यह जगत चकित,
मैं हूँ तव श्रद्धा में रत हे
प्रभु ! क्यों करते मुझको दुःखित ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९४. भवद्दिव्यसन्दर्शनं मे प्रदाया
श्वविद्यां मदीयां समुन्मूलयैनाम् ।
अतिक्लेशतो जीवितं यापयन्तं
दयाम्भोनिधे पाहि मां रामचन्द्र ! ॥

मेरी जडता नष्ट भ्रष्ट कर
पार करो भव के दे दर्शन,
प्रभो ! बिताता हूँ मैं अपना
दुःख पीडित क्लेशमयी जीवन ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९५. **यदि स्यान्मम त्वत्पदध्यानमेव**
स्वतः किं न नश्येत् जगद्भ्रान्तिरेषा।
निरोद्धुं न शक्यं मनश्चञ्चलं मे
बधान त्वमेव प्रभो रामचन्द्र !॥

यह भ्रम नष्ट तभी होता है
जब है तव पाद-भक्ति सचमुच,
वश में ना रहता चंचल मन
जिसको तुम आबद्ध करो कुछ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९६. **त्वमात्माऽगुणस्सर्वदाप्येक एव**
त्वयीदं नभोनैल्यवत् विश्वमस्ति।
यतो नावकाशोऽस्ति भिन्नाणुयुक्तेः
ततो नैवजातं जगत् रामचन्द्र !॥

एक अगुण आत्मा तुम जिनमें
जग है गगन नीलिमा जैसे,
अणु क्या मिलते भिन्न हुए जो ?
जग भी जात नहीं है वैसे।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९७. भवेन्नाश्रयश्चाश्रितोऽप्येकवस्तु
स्वयं भिन्नवस्तूनि नैकीभवन्ति ।
अतस्स्वप्नवद्विश्वमेतन्नसत्यं
विना त्वत्स्वरूपं वियत् रामचन्द्र ! ॥

एक कहीं होते क्या आश्रय
औ' आश्रित एक नहीं वैसे
भिन्न वस्तुएँ भी, जगती है
तव रूप लीन सपने जैसे ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९८. अविद्याहतस्त्वय्यनन्ते विभून्नी
क्षते साक्षिणि व्योम्नि मिथ्याप्रपञ्चम् ।
त्वदीयाङ्घ्रिचिन्तामृतास्वादमत्तः
त्वदन्यन्नपश्यत्यहो रामचन्द्र ! ॥

साक्षी औ' नभ जैसे तुम में
देखा करता है मिथ्या जग
अज्ञानी, तव चरण दास तो
तव दर्शन ही पाता पग पग ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

९९. झटित्येहि ते दिव्यसन्दर्शनम्मेऽ
धुना देहि मन्मोहजड्यं धुनीहि ।
मदीयोत्तमाङ्गे कराब्जं निधेहि
प्रभो पाहि मां पाहि मां रामचन्द्र ! ॥

आओ प्रभु ! जल्दी दो दर्शन
दूर करो जडता मोह भरित,
मेरे सिर पर धर दो निज कर
कोमल कमल सरीखे राजित ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१००. नमः क्रूररक्षस्तमो भास्कराय
सकृज्ज्ञानकीहृन्मणीतस्कराय ।
नमस्ते नमस्ते दयावाहिनीन्द्र !
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ! ॥

क्रूर निशाचर सम तम के रवि !
भूजाता माता की मानस
रूपी मणि के तस्कर ! हे प्रभु !
नमो नमो हे कलित दया रस !

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०१. अविद्योत्तरं द्योत्यमानः प्रबोधो
विशिष्येत्सतां नाशयित्वा विनाशी।
अविद्या तमोवत् मृषैवेति भाष्यं
भुशं युक्तियुक्तं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

नष्ट अविद्या को कर विद्या
दिव्य तेज से होती द्योतित,
''मृषा अविद्या तामस जैसी''
भाष्य सूक्ति यह थल थल घोषित।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०२. भवद्भक्तिसूत्राणि शाण्डिल्यमौनिः
हितायैव सम्प्रोक्तवान् मानुषाणाम्।
मतं तस्य लोकोत्तरं विश्वसंस्त्वां
भजेऽहं शरण्यं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

किये प्रकट शांडल्य मौनि ने
भक्ति सूत्र तव जग हित के हित,
लगता लोकोत्तर उनका मत
मुझको तव पाद कंज आश्रित।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०३. त्वमेवाखिलं विश्वमेतत्तवानु
ग्रहादद्य विज्ञायते वस्तु तत्त्वम् ।
विपर्याय सन्देहविभ्रान्तिमोहा
विनश्यन्ति सीतापते रामचन्द्र ! ॥

तुम ही सब हो, जगत समझता
वस्तु तत्व सब करुणा से तव,
भ्रम संशय औ' मोह विपर्यय
नष्ट हुए सब मेरे प्रभु ! अब ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०४. पितृभ्यो यथा जायते मच्छरीरः
तथा मत्प्रबोधोऽभ्युदेति त्वदेव ।
न कोऽपि त्वदन्योऽस्ति तत्त्वोपदेष्टा
गुरूणां गुरुस्त्वं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जैसे यह तन माँ - बापों से
प्राप्त मुझे वैसे ज्ञान सकल
तुम से, अन्य कौन तुम से गुरु
वर तत्वोपदेश के संबल ?

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०५. **अभावोऽपि नानाप्रकारैर्विभक्त**
स्तमिस्रं यथा सूर्यवत्तार्किकेण ।
महापण्डितम्मानिनो मादृशस्य
स्मयश्शोचनीयः प्रभो रामचन्द्र ! ॥

तमस अलग करता रवि जैसे
तार्किक करता अभाव विभक्त,
ज्ञानी जैसे निज को समझे
मुझे बचाओ गर्वानुरक्त ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !

१०६. **यथान्धा गजं जज्ञिरे शास्त्रिणस्त्वां**
स्तथैवाविदन् पौरुषेयप्रमाणैः ।
अवाङ्मानसं सत्यमात्मैकवेद्यं
भवद्दिव्यतत्त्वं प्रभो रामचन्द्र ! ॥

जैसे अंधे गज को जानें
बुध भी बोले निज मान जगत,
मनस-अगोचर दिव्य तत्व तव
आत्मवेद्य ही होता जो सत ।

हे सीतावर ! राम दयाकर !
पार करो मुझको भवसागर !